

[illegible]

वक्रवस्तु दक्ष नधिगविधूसकलां योवता इंसू दृष्टा वक्रां वक्रां हुक स्मरु निमूकुटा ह ७
 स्यादां रज्जुं ॐ नृय मानानं व्यावा मूलविद्यया वा पुनीयसमयविद्यया की साह
 हंस ॐ यथा र्यस्वनि वसिष्ठा जलि त्रियं विकी र्यमज्ञानवकस्य दग्ध पूजा संकल्पं कृया
 ॥ ॥ नमः शिवाय नमः ॥ नमो विष्णु नायकाय नमः स्वस्ति नमः ॥ ॥ नमो भगवते
 स्वनातन नमः मूलं नमो लया म कृत्वा ॥ नमो शिवाय जीवका र्थो पूजा मान ह ॥ ॥
 नमो जीवो अश्वत्थ वक्रमानवर्ष मासेयक गिथिवा ननक पुया गकन लम ह किले स वायन
 त्रमादि गुरुत वा सिद्धा या प्रत्यगि र्थे मम सकलयाप कया र्थ कपु विध पू र्वा र्थे मना वा किं
 नमिध्व र्थे जीमहा विप्र नमः नदी श्री र्थे यथ भक्ति पूजा या जीया इका मरु मय विधय ॥
 ॐ नमो कल्प विधय ॥ ॥ गग ४ सुव लूदि न विगयी ॥ ० सिद्ध व न जसा वा कौं कूम के र्थ न
 मगमद र्गमा वनायु र्जी ख लु वक्रवन्द नादि सुगन्ध द्रव्ये ने वा सम म र्थे म सम लिक
 ल ग किं क स जी कम गि सुन्द र कनक डाला कया लिख ॥ ॥ जीव की लिख

मन सा मूल मुख नमो नन लिख दि नि कौ र्थ ॥ जीमहि न्द्रु गगानि सय प्रललि तं वसु मयूक
 वरि की लक्ष्य र्णा रिगं वसु मर्म लोका नव कौ वरि ४ वा कृष्ट कृष्ट र्थ कर्ण न्यदल र्थ कृष्ट र्थ ना
 किं र्थ विमृश य ग वि र्थ विलिख की वक्रा नार्ज वरं ॥ ॥ ॐ र्थ जीव क मृद र्थ ॥ नमो जी
 समस्त पुक र्गु कर्ण व र्थ पुदाय कूल को ल निग र्थ नरु त्या नि नरु स्य या गिनी र्थ ४ जी वा इ क
 ॥ नमः व कृष्ट र्थ जलि नि कृष्ट ॥ ॥ ॐ जी कौं कृ सं ४ कौं कृ ४ नमो जी ॥ ॐ
 वी जम र्ग कला मूदा दग्ध क पुति य विती जी कृष्टा ॥ ॥ ॐ मृदा रिनी ॥ ॐ ॐ दा व ल मृदा जी
 ॥ ॐ जी कर्ण ल मृदा जी ॥ ॐ व श्व मृदा ॥ ॐ ॐ मा द मृदा ॥ ॐ म हा कृ ण मृदा जी ॥ ॐ ॐ र्थ
 य र्थी मृदा जी ॥ ॐ वी ज मृदा जी ॥ ॐ यानि मृदा जी ॥ ॐ ॐ वि र्थ ल मृदा ॥ ॐ ॐ
 मृदा र्थ दग्ध क र्थ वे ॥ ॐ मा द म हा कृ ण ख वनी वी ज या न्या ॥ ॐ र्थ दग्ध मृदा ॥ ॐ
 ॥ गग ४ वृष्टा कृ मा दाय ॥ ॐ र्थ लोका य नमः ॥ ॐ जी कृ णि कला काय र्थ ॥ ॐ र्थ र्ग ला काय नमः ॥
 ॐ र्थ ना व्य ॥ ललि ग क र्थ नमो वि र्थ विक र्थ क म क म ल क कि न द क हल क र्थि क दी व
 नमः ली का दि वि विध स लि ल कृ ण म व य स रि ग य य ४ प वा रु सुन्द र मा कि क र्थ क म

मना विधिन लक्ष्मी नमः॥ सुखासिधु आलो अ न क का टि मोरु लु कि न ल स वा ध य आ गि मा ति
सु दी प अ नू त म ति म ल सा नू स मू च्छि न वि वि ध नै नि क को ल क कू न थो दि क नु ध म ना वि गि वि
वि ध क नु य कि कान न धि न वि वि ग के न क य र्गि य आ ला ॥ ६० ॥ अ नू मी लि ग व ह ल य नि ला के
ट क लु च्छि कान न मं ठा न वा डि का म ना ह नू य कू ल पा नि जा ग या द य नि ८ कू ट या का नू गु क ला
न व मि ग पु का लु म नू न क म ही न ह शौ न मू दा प द क अ खि ल गु ल ग ल ग ल क लि न दू स
म ल द ल य ल व य नि क ल ल वि ग क ल्य ह न्का न म म ना ह नू वि क व कू व क कू ल क लि ल
स्व न्ध रु नि श्व न न की ज न न्ध न क का न क कू न कू ध न मं ड ली न व का म ल कि न ल य नि
व य वि ग मू सो न र सा ना म न मू न य न व लू नो जाल स कू ल जा गी र य क क लु च्छि पु न्ना ग
क ज ना र्ण क व कू ल कू लु मू ल्हा का क के का वि दा न हि गा न रि डि मू थि का माल गी कि
कि ना ट या ग ला दि वि वि ध मू सो न र रु नि ग मू ग जी ग ल म न्द मा नू ग की पि न्क लु म नि
क ल ल लि ट र नू न जी विल सि ग । द ल वि क सि ग मा ध वी ल ग म लु पि का रि मा म

य न स स रु का नो पु च्छ न वि ल क पि नू ना र्ग वी ॥ ७ ॥ य न क ना उ श डि मा दि रु फ ल ला न
गु म्म ग म्म आ ग न म्म स्था दू रु लि ट नू ल नू म कि ग ह न अ गि क ल रु डि न पि के पी को मि थ
न नि थ वि ग वि क सि ग कू लु म को ध ग न म क न न्द वि नू स दा रु या न ला ल य ग म न म ध क
न द्वा ग र्ग का न मू र व लि ग दि ग क र ल लि ग धू ल्हा न न सि ग या ना व न य म्म वा च न वी न क द म्म
म वि ग वि य म मू ल स न्द न न कि न म य न य थ नि थ वि ग र व ड लि ट व का न जी वी जी व का दि
य ग कि ग ति स वि ग म ल य नि ल धू नि गा खि ले म नू स व धि व न्मि य लू मू र्म न शू नि स र व द शी
ग ल मू दू मा नू ग स्य नि गा नि उ स म न स ग न न गी वि य च्छ ग कू ल म स मू ह कि मि नि ग म द ल ल लि
ट य नि य स म द ना त्मा न न्द ना धा न धा ला ग द ल न क मू ग म्म नि धि ला ल क ली ल दू टा य न य
ग म्म जा ग वि म ल शी क न क द म्म य ग न गी ग लि ग व न्द का नि गि ला जा म्म न द का र्ग स्व न सू टि क ज
वी लि ग मू क न ग ल स दू ज म मू ल वि दि क का ध का न का द ल स धि ग क क क क स म न स वि नि
अ न व वि दू म व लू शि र न गि ग नू ल ता रि रा मी ग न र्ग स वि ग म न क द मा या न व स न यी गि

वकिर्नसूनयगिनिक्कटकुसूम। एवसाभादभीतलनीकलिनमिथिलगसदागति कपित व्याका
 ययव्यासावतिगिगसूननीचक्रमठलं। सूनयगिदूक्षरनलसुकाजिनदिगक्रमलुलकिवल
 कलायच्छटायायविविधनत्रघटिन। विगमाभुंगरुसहस्रसंकूलं। मालिकुमयानिस्कूलास्कूल
 गगतिगमनकटकुलविन्दा। न्यान्यनागनीललाहिनगान। गुणगहयैवेद्वयमयमलदय
 लसदृशकपाटरगममदमयदहलीतिनाम। अमिविगदभीकिककलायनिर्मितविवि
 यगवाकासंवाध। एवहिगं। रून्नुनीलमय। एवपूर्व। राजावहुघटितागुंगवागायनं। वन्द
 कानिगितानविगादानं। कणगहदूसाहजनकं। पुवालकावनमयति। डि। आकानवहि
 गं। जहिनीसुहिनी। माहिन्याकषनी। पुमुखयनिवानानेकसरप्रपनिहगपूर्वमायी
 कायूरुणी। सविगकाचिननीथसूटिकनिर्मितपूर्वद्वारं। जयाविजयाजयनी। अयना
 डिगातुम्बुश्वनी। पुरटिगि। आवनलदेवगानेकगण। एवविगदन्किलाम्नायदवीनि। गस्थनी
 सविगवेद्वयमनकगन्नुनीलघटिनदन्किलद्वारं। पिशुद्धिनवानाशीकटका। एव

नीमहंगाविकाकुममलुलसृष्टयैरधुगलिखास्यच्छन्दललितस्यच्छन्दजामधीगडध्रा
 ल्हादिभूषविभक्तिकमाद्यनकमविकानदवगानवउयवसुदिवसिगयच्चिमान्नायनायिकाक
 क्रिकाउवाणिगागमभदयवातयप्रनागमूकावचिगयच्चिमदानैसृष्टिस्त्रितिसंहानीमारवाका
 लनैकवर्षलीयकुपुमधनीमृत्पूगीलाकध्वनीवाजनाजध्वनीस्वर्णकाठध्वनीजंकध्वनीद
 लास्वनीलासायुजकीलीसिद्धिलेन्नीपुष्टिकायविकानसहितांगनाम्नायनायिकासविगन
 वनत्नमयाकनदानैउर्द्धात्रायमथाध्वनैकूमन्ददीवनानविन्दमन्दानकपुनर्लोस्यल
 सुंदारुनविगचूगाध्वन्यनूवादिपूतदीर्घविन्दनमालाजालसहस्रसंकलनवभौकिक
 निर्मितकलधौतकलभयलगावर्त्तमानमातिव्यकलभकलिगाईलुकाधूनदलुएव
 वागयगुणतसम्भाप्रिनिगमैदिव्यइहूलनविगकनकसुगुण्ठिगागुच्छूविगविगप
 विगानसाशिगवद्धाक्षलितपुलवमानमस्तयहस्तगुणगवामलनाजीनगमैपूष्यनाग
 मलनविगकुशुपनिजागहविचन्दनसदात्रादिगुननगुच्छूकिर्भिविगविविधमाधविकाक

[illegible][illegible]

गिसवरद्वन्द्वो घृजयित्वा पागस्त्रायनं वृथा न ॥ ॥ अथमदो ज्ञानन्दकलशस्त्रयनं ॥ यटं युक्ता
 ल्यसमी ॥ तं कीं जीवास्त्री गमये ॥ नमः ॥ धृष्टिगिरालुमानन्दश्च नष्टविगं ॥ आधनस्त्राययदाध
 ॥ सो वल्लवाथ नाजग ॥ श्री कीं कीं कीं कीं मरुति यूनसुन्दरी त्वभवयी गिवाट्टकं साधयामीति स्त्र
 यनं ॥ गंगकजमूनवे व ॥ गदावनी सनश्चती ॥ नर्मदनिधूका वनिजल अस्मिन्निधीकुरु ॥ मयना
 याधि सिमादि ने सत्यानं घृजय ॥ कीं जीं यं अर्नमये ॥ २ नं कन्दययि ॥ २ लं मदनये ॥ २ वं मी
 नकगनाय ॥ २ गं मन्मथय ॥ २ रं दयकाय ॥ २ सं सनाय ॥ हं यधुनाय ॥ नमः ॥ हं साहं वन
 लदवी हं मः ॥ ६ गिसफवानं जयित्वा वाला २४ जये ॥ नंदनकलान्मनं वद्विर्मलुलाय ॥ हं द
 दनकलान्मनं सूर्यमलुलाय ॥ संधी दनकलान्मनं साममलुलाय ॥ यासना सा स्वयं द
 वी या मधसस्य यं निवशा या गन्धस स्वयं वक्रा या नसससुजना दन ॥ ३ ॥ यधुशुद्धि
 सुगृहीत्वा घटस्त्रयं विवानमालादये ॥ ॥ सामान्यार्थं सर्वं घृजा ॥ श्रीवक्तृस्यार्थं मद्रा
 नस्ववामरागा ॥ यवहन्ता जीवाश्च हस्तेन मत्स्यमूडया वामरागा माया विनह विम्वरुचवगु

म्नात्मकीं विलिख्य सवामकवागुं धनावहृत्य वामनं गंधयूष्यान्कनं ॥ सवालाना विद्याया साव्यसुक्
 मतलिका लदन्ति लवामायुष्यम ॥ धनवर्षयूष्य अर्जुन युक्ता लितमाधनं ॥ तं वारुवनयुनि ह्यय
 नं अग्निर्मलुलाय दनकलान्मनं रं खसामान्यार्थं यागा यनमः ॥ कीं कामवीजेन त्वं सर्वय
 ति स्त्राय ॥ हं स ॥ सूर्यमं जलाय द्वादशकलान्मनं रं खसामान्यार्थं यथाय ॥ ६ ॥ या माधु सो ॥
 सक्रीं जीनसिद्धीदकं नायूर्यं गन्धयूष्य निदिश ॥ सो ॥ ४ ॥ वं वनलमलुलाय धा ॥ उलकलान्म
 नं रं खसामान्यार्थं मृगाय ॥ स ॥ य ॥ गं रयवजमून गिमकुली कुशमूडया गीर्धन्या वा ॥
 ॥ श्री वनलमदवी श्री नमः ॥ मूलनसफवानमरि मन्तु निनी कलदीनमः ॥ ॥ धनमूडयिद
 ॥ रं गं र्यादयित्वा रं रवायधुयदीपं निवद्ध ॥ गच्छं स्वादकनसिपूनाय यथा मानं घृजा
 पकनत्तमनिर्षया ॥ ॥ गता विरग्यार्थं घृजा ॥

हुं नमः श्री गुरु कालिकाय ॥ अनंश दद्यात्तु ध्यात्र नृपां यागं श्रद्धां व श्रद्धां विद
 लं लीने नानवात्मिकं नृन्ययदक्ष्या नमद्विषद्विशी मयुदय विष्ठा ॥ वद
 कयद्विष विलीन नृपां नृय विमूका वदु विमूका नृपां कवला मा (गुम
 विशुद्ध देह ध्याय तसं हात्र कनीच काली ॥ मूर्त नृपां दगु ध्यातुं मूर्त
 दलयं नृमुद्रां ग (गुम मूर्त कृत्रि नृदि श्वलयं तयं कृत्र हं कृत्र हं
 वर्णं नृम्वन निई वा कृत्र महायी ० नृका (ध) कलय म्या ध्यातुं ग वि
 नृयानि नियतां उा द्यादिकालि गता ॥ श्रुत कात्र धर्मे कृमा श्रुति
 व ० धूमा श्रु धूमा मि व ० धूम म्या मयला सक श्रुति निता (ध) गति ग
 नृय शो ॥ पायसादिकथा नि नाशिद्वय गीयात दूद्वान नृगाल द्याधध

नृम दूर्ध्वरु लकशी मानमिय नृया ॥ वर्यनी मार्गं शिखान्त्रमार्गं सके
 कक्षा पुमि तां मृधु सयद शं मवान नृय शिवारु कात्र माक धुवाय (ध)
 कात्र यत्री वृतां ग स म हा म्या कृयेनी मवदा तां व नृउ व वं ध माक
 धकत्री काली द्वि नृ कृवा ॥ यदवीयू ग वद मय क शवी नाथ नृगुणी
 यती शी त्रु डे श्वत्र मदा शि यी नृक शिवाना दानु नादा द ग ० गवा
 गुव विवर्जिता मृग मयी मृदुया ताकाय ता शक्ति ० मव लया एता एता
 तत नृमी कालिका नो मृदं ॥ हुं काली ग ० यत्र म क लया मा विमूका वि
 ली नारु कात्रा द्या कृल विदू लनी मय कृटा क म नृ ० ॥ सिल्या पायय

गत्रभकनीदिष्टे ज्ञेयायथावाकल्यायययययविजयाद विशामानमामि॥ गण
गणो मयुगिगययाजालविषयककीलीनालाक४६ ययनियनवक्ररुण
दियायंकीवीजाश्रवमणिभृशगमसकमधुसन्नसुदुंगांदवीमत्रमविम
लीउद्यकालीनमामि॥ क्वीक्वीनावासाहयगजमहोमककालसुर्वगममी
संगाईधयमविमलारुणलूकसिंहा४६ गमादूनादिप्रवनवकागत्र
यादगास्यानखादवियनममुखदाउद्यकालीममामि॥ य४वद्राव
खययथगगावहुधदगनषभ्यामनेखागममागमहमूलमनुदवि
हाकात्रानात्रयत्रयमहावा७ गक्रयमनुगां दवशीकमयथगतका
लिकामममामि॥ त्रयत्रयत्रयकालिकालत्रणीकत्रात्रीयत्रिगतदशका

लिउद्यकालीमकालीचलवलदलकालीयकिवक्राककालीविलसि
गकत्रकालीकालकल्यानकालीमगनिशुवत्रध्वत्रीमधुमालावि
हात्रीहृदिनयनहात्रीमहानागवृक्षीत्री॥ त्रियत्रिगीतकलली
शाशुवर्मगवीत्रीयउत्रमममनाकुकालकालीउकाली॥ कलि
गठनलकालीकालयामाकालीललिगगहनकालीमूठमालाकका
ली॥ म्रवमयत्रनात्रीवन्द्यमानादियालीकलयउममकालीकल
यासानककाली॥ मेहुंविदर

हिने वं विभु नै ॥ २ ॥ ते गुह्य यथा शन कि ते जो गयी ठे सता मने नाना सि सि र शक्ति म २

रनमः श्रीगुरुभ्या ॥ ॥ नमामि सद्गुरुं भक्तं यत्नं शिववृषिं । शिवमायागयी ० स्कं मृत्तिकामार्थ
सिद्धये ॥ वस्त्राचारं शक्तिमुक्तास्त्रयं यदत्रो । नानां यथाश्रयं ततः ॥ श्रीगुरो यथाश्रयं ॥ चन्द्रवी
जं तदादिस्कं शिववीजं नित्याजयत । मादनं शकवीजस्कं यथाश्रयं कुवलेष्वनी ॥ शिववीजं मादनस्कं
नकाषष्ठनित्याजितं । वक्रसंक्रमवर्षस्कं मायावीजं समुद्रवत् ॥ बुभुक्षुर्वं शिवदिस्कं मन्दिन्यस
मन्त्रितं । धराचलसूतावीजं मकराणि नित्याजयत ॥ वक्रगुरो यवीजा ४ कुधीर्षं नित्याजयत
। पिनाकीर्षं चंद्रवीजं स्कं माकां शं वक्रसंस्कितं ॥ चतुर्थस्त्रयं यकं नादविन्दुविस्फोटं । सर्वभक्तगर्भ
यास्यं पंचपंचाक्षरी एवम् ॥ यंचकूटात्मिकां विद्यां सर्वतन्त्रप्रणमपितां । विद्याचूजं मलिद्धवीं या
कः सर्वोक्तमः प्रियं ॥ नवस्त्रं ह्यमयावस्थां गन्ताश्चर्यं यस्य कस्यचित् । यानिमायनमं शक्तिं ऊगः
त्रैलोक्यकाविद्यां ॥ नाममामिमहादेवीं पंचमीमांसावृषिणीं । यस्यां सर्वं समुत्पन्नं यस्यामशापिति

वृत्ति ॥ लयभ्रमतिगामेव पंचमी ४ पुनमांशुहं । युगहं गुह्यं वाचं वदन्नायं परमहितां ॥ शिववृक्षं
उषादलं तथासूदलकलिकं । शंकराक्षं द्विगं गाय वसं कालं च वेन्दवं ॥ नवभक्तनमोवाचकं महोष्ठी
विपूनामयं । अधः कल्पतान्त्रिणं हवान्यावत्तमन्दिनं ॥ तत्सिंहसनादेवा ४ श्रीचक्रं पुनमांशुहं ॥
वृन्दामां नक्षत्रं पूर्वं आरुणायामग्निदेवता । याम्ययमः सदापातु नैऋत्यां निमृतिश्रमां ॥ पश्चि
भववृक्षं पातु वायव्यां वायुदेवता । धनदस्यां रुद्रपातु नक्षत्रां मीनं वा विष्णु ॥ उर्ध्वं पुजापति ४ वा
तु अधः शनकदेवता । उर्वदशदिग्भक्तं कूर्चकुंदवता गल ४ ॥ गल ४ सर्वदापातु दक्षिणं
क्षयत्सदा । द्वात्रिंशः सर्वदापातु दहली नक्षत्रं सदा ॥ गलनाथः सदापातु दुर्गां मां पवित्रकुरु । वट
कोत्तं नवभक्तं कुरुपाला पवित्रकुरु ॥ सरस्वत्या च संन्यास कामदेवः सर्वदा ४ श्रीग्या सरस्वतीकापि
पातु मां तदन्तवत् ॥ चक्रस्य पश्चिमं द्वात्रिंशं हवान्यावत्तमन्दिनं शंखपद्मनिधीवर्कं कुरुतां ममासिद्ध

नसाकर्षणरूपाच, गन्धकर्षणरूपिणी ॥ चित्कर्षणरूपाच, रस्योर्कर्षणरूपिणी । स्मृत्योर्कर्षणरूपाच, नामोर्कर्षणरूपिणी ॥ वीजाकर्षणरूपाच, आत्माकर्षणरूपिणी । अमृताकर्षणरूपिणी, धनीनाकर्षणरूपिणी ॥ एतादृशकृत्स्नानि ४ स्वर्गना ४ वा ४ धा ४ दल । सर्वाहीषूयदध्या, नकाकर्षणरूपिणी ॥ अर्नगकसूमा पूर्व, दक्षिणनक्षत्रमखला । याश्चिभनक्षत्रमयता, उरुभसयनायुवा ॥ अर्नगवखात्रा, नयी, नैर्जुन्यनैर्गरीगिनी । अर्नगकर्षणरूपाच, वीजाकर्षणरूपिणी ॥ कवर्गकर्षणरूपिणी, अर्नगकर्षणरूपिणी ॥ नकाकर्षणरूपिणी ४ सर्वा, दध्याचरूपिणी ४ ॥ सर्वसंकाहिनीगकि ४ सर्वविदाविनीतथा । सर्वाकर्षणगकि ४, सर्वाकादयनकाविणी ॥ सर्वसंभाहिनीगकि ४ सर्वसुमनरूपिणी । सर्वहर्नगकि ४ सर्वतावसेकाविणी ॥ सर्ववर्जनगकि ४, सर्वाभादयनरूपिणी । सर्वार्थसाधनीगकि ४ सर्वसंपरिपूरणी ॥ सर्वमनुमयीगकि ४ सर्वद्वयकरी । वरुदध्याचरूपिणी, नकाकर्षणरूपिणी ॥ सर्वसिद्धिप

दादवी. सर्वसंपत्पुदातथा । सर्वप्रियंकरीषेव. सर्वमंगलकारिणी ॥ सर्वकामपुदादवी. सर्वदूखविना
 जली । सर्वमृग्युपशमनी. सर्वविघ्नविनाशिनी ॥ सर्वरुग्णसुन्दरीदवी. सर्वसोराग्यदायिनी । वाक्त्रद
 षात्रचक्रका. नर्दाकूर्वन्नुसर्वदा ॥ सर्वरुग्णसर्वशक्तिः । सर्वेश्वर्यरुलपदा । सर्वज्ञानमयीदवी. सर्व
 व्याधिविनाशिनी ॥ सर्वधनस्वरूपात्र. सर्वपापहन्तातथा । सर्वानन्दमयीदवी. सर्वत्रकास्वरूपिणी ॥ त
 थैवहिमरादवी. सर्वगिनरुलपदा ॥ त्रिनदधनचक्रका. नर्दाकूर्वन्नुसर्वदा ॥ वाग्दवीवशिनीपा
 तु. पातुकाभेश्वरीचर्मा । मादिनीविमलापातु. अत्रयीरुपिनीचर्मा ॥ सर्वेश्वरीचमनका. कनारुकी
 लिनीसदा । अष्टकाशकनदया. नर्दाकूर्वन्नुमसदा ॥ पातुकाशकनदया. निर्धनयधदवता । दय
 ४पीचकुमधस्का. नर्दाकूर्वन्नुमसदा ॥ अत्रयीचर्मापातु. अंगस्काचांगरूपिणी । महादेवाचमधस्का
 नर्दाकूर्वन्नुसर्वदा ॥ श्रीमद्विकाराचमधस्का. तत्रकाशकनदया. मधस्कासर्वदापातु. चनमु४पी०द

वता ४॥ कामकामेश्वरीपातु. पूर्ववक्त्रेश्वरीतथा । जलधनमहापी० पातुमांरुगमालिनी ॥ सूर्यन्दवन्नि
 पी०यु. विन्दुचक्रनिवासिनी । खन्तस्वरूपिणीपातु. श्रीमद्विपुत्रसुन्दरी ॥ जेलाक्षमोरुनचक्र. चतुन
 असुरधरुन । पातुमामनिर्णयदी. त्रिपुत्रायनमेश्वरी ॥ सर्वेश्वरीचक्र. चक्रकाशकनमनाह
 य । तत्रचक्रेश्वरीनिर्णय. पातुमांरुपुत्रेश्वरी ॥ तथाष्टदलचक्र. सर्वसंकारुकारक । तत्रचक्र
 श्वरीनिर्णय. पायात्रिपुत्रसुन्दरी ॥ चतुर्दशचक्र. अत्रसोराग्यदायक । तत्रचक्रेश्वरीनिर्णय. पा
 यात्रिपुत्रसुन्दरी ॥ वाक्त्रदधनचक्र. सर्वार्थसाधकवत्र । त्रिपुत्रात्रि४सदापातु. ममकल्याणरुगव
 ॥ अत्रदधनचक्र. सर्वत्रकाकनवत्र । निर्णयचक्रेश्वरीदवी. पायात्रिपुत्रमालिनी ॥ तथाष्टकाशक
 कतु. सर्वत्रागरुवत्र । पातुमांरुपुत्रासिद्धा. दवीचक्रेश्वरीसदा ॥ सर्वसिद्धिपदचक्र. अष्टकाश
 कनसदा । चक्रेश्वरीचमनका. कनारुपुत्रासिद्धा ॥ सर्वानन्दमयचक्र. श्रीमद्विकाराचमधस्का ।

महाचक्रं श्रीपादु, श्रीमद्विपुलसूचनी ॥ निर्याकामेष्टरीपादु, पादुमांरुगमालिनी । श्रीनामस
र्वदापादु, रुद्रधुपादुमांसदा ॥ वक्रादिवलीपादु, महाविद्येश्वरीतथा । पादुमालिवदूतीच, ल
नितावकयत्सदा ॥ कृष्णसूचनीचमापादु, निर्यानिर्याचपादुमां । निर्यानीलपताकाच, विजयापादु
सर्वदा ॥ श्रीसर्वमङ्गलापादु, निर्याकालीधुमांरुनी । विजयासर्वदापादु, धातुणीपादुसूचनी ॥
महाविद्याशुनीयाया, पादुमांवदूतपिती । महासफदणीपादु, निर्यामानन्दकादिवी ॥ चतुष्टयसम
यादया, योगिनी ४ पादुसर्वदा । डाकिनी वाकिनीपादु, लाकिनी काकिनीतथा ॥ लाकिनी हाकिनी
पादु, चक्रस्वाध्यागिनीगता ॥ वक्रस्वामाठका ४ सर्वावकां कर्वकु सर्वदा ॥ चतुष्टयमहाचक्र, वक्रमां
परिवक्तु । पादुमामनिर्द्वय, धातुष्टयसजापति ॥ तथाष्टदलचक्र, शिवामांपरिवक्तु । चक्र
द्विष्टयचक्र, लास्वामावकयत्सदा ॥ विदधामसदापादु, यशुनात्रायल्लविष्ट ॥ अष्टावमध्यचक्र

चार्वाकः सौराष्ट्रं कश्चिद्वैराग्यवैभवः ॥ सविस्थितिलयाश्चर्या रक्षाकुर्वन्तु सर्वदा ॥

शु, पादुमांयनमेष्वरी ॥ नवचक्रेश्वरी । त्या, यत्राचपरमायना । निर्याचिदूषितीपादु, पादुमांयनम
ेष्वरी ॥ पादुमांमनिर्द्वय, श्रीमद्विपुलसूचनी । महाविपुलसूचनी, विकनीयाचयायना ॥ वक्रस्व
पितीपादु, यंचमीयनदवता ॥ यंचतत्त्वतथायंच, यत्किंचित्पुनर्मस्मृतं ॥ निर्यायंचगुरोरी ४ पादु, यं
चमीयनदवता ॥ यंचमीपादुसतर्त, निर्यावककुयंचमी ॥ लाकिनीपादुमांनिर्या, यंचमीयनदव
ता । निर्यायंचसर्वत ४ पादु, निर्यानिर्माल्यवासिनी ॥ लाकिनीकासूचनीपादु, निन्दूचक्रनिवाशि
नी । वक्रस्वपितीपादु, श्रीमद्विपुलसूचनी ॥ निर्याकामेकलापादु, मूडामांपादुखचनी । डाकि
मांसर्वदापादु, मूलाध्यानिवासिनी ॥ ॥ ॥ ॥ विपुलसूचनी, वक्रामकुचक्रधर्त । यूजाकामेक
धितं, साधकानां सुखादहं ॥ कर्मनोनतत्रधिना, श्रीमद्विपुलसूचनी । संपूष ४ साधक ४ धृष्टा, नका
मकुतदाय १० ॥ पात ४ कालं धुविहृत्ता, निर्यायामर्द्धनायक । अथवासंकरेपादु, वाजस्वानचदू

राज्यं देयं धनं देयं देयं सर्वं त्वमेव वा ॥
अधिपुत्राः प्रदातव्यो न देयं यं न मीलनं ॥

[illegible]

प० रुक्मिणीयामय ४॥ स्त्रुग्ने विविदिता रूत्वा, दवीपूजा सिद्धतत्त्वं ॥ रुक्मावाधाय यद्यमु, लिखित्वा स्त्रा
जम्भूरुर्म । लिखायामथ वाक ८४, कनकावाधाय मयि ८५ ॥ सरवत्साधक ४८ प्रष्टु, माणिकार्थं सरवत्पिय
४॥ सरवत् सर्वकामाति, यवस्त्रस्त्रायनं रवेत् ॥ तस्मादिदं ययत्नन, धाय यद्विधिना सदा । यत्ति त्वापूजः
यित्वा च, जेला कवणमाप्नुयात् ॥ रुक्माय दीयते यस्मै, मन्त्रवक्त्रकं यवम् । धृत्वा सर्वधूमधस्त्रं, सर्वका
मेतना लभेत् ॥ यद्यद्वा कृतिकामाति, रुक्मिणीकृतिकामाति च । सरवत्नागसंदहो, उविस्त्रग्ना वसातल
॥ दृष्ट्वा तं साधक ४८ प्रष्टु, गुरुनाकसंस्त्रिं रुक्मा ४॥ दूना दवपलायकं, न समर्थं गृहिं सिद्धं ॥ विषं निविषतां
याति, पापानि या निसंकर्यं । दववन्मानवा रूत्वा, रुक्मिणी विलसुर्व ॥ तस्मान्निर्गुणं प० द्वीमान्, रु
क्मिकामार्थं सिद्धयत् । रुक्मा रुपूजयद्दवीं, स्ववक्त्रं सर्वदा चरेत् ॥ पूर्वयाति यत्रिक्लानं, चर्यं जन्मस
रुचकं । न पुन जायते शानो, मन्त्रं नास्ति वापयं ॥ गन्धर्वरूपवा रूत्वा, संयूज्य परमेश्वरी । न कामर्त्तं

कवर्त्तकसहस्रं पुरविपुरगता जलपीठे जयसायद कोलेमध्यपीठे त्रिपठगति युता देवि चंगा
 साक्षाद्देव ४ गिवा वामदनदहनकृत्स्नवराजाय नमः ॥ १७ ॥ अतिमूढयामल यं यमी सुव
 ना ४ समाप्ता ॥ ॥ सादृशीयूक्त कीदृशं तादृशीलिखितं मया, यदि सूक्ष्ममनुद्वन्ता कम
 स्वयमभिव्यवी ॥ ॥ नेपालसम्बर ८२१ हान्गुलकुक्कनकादध्मीति (थी) संयुक्तलिखितं प्रमाण
 राशुदवस्थ ॥ ॥ श्री श्री श्री रुवाली प्रसन्नायु ॥ ॥ सर्व ५८८९ का रिक ४३६५९
 दचका ४१२ दवीया दास ४१ जके धत ० न द चका ॥ १॥ २

आ ०५५ ३५५ कृषि

ASHA ARCHIVES

997

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

श्री शिवाय नमः श्री गुरुदेवके लिये

रुं नमः श्रीगणेशाय ॥ श्रीमहाशिवाय नमः ॥ ॥ केलीसखिखरात्रम्य, नानावत्तपरणः
 हितः । कल्पयादयमध्वरु, नानापूषापरणहितः ॥ १ ॥ मयिमद्यमध्वरु, मुनिगन्धर्वशवि
 तः । तं कदाचित् सुखासीनं, रुगवर्कजगद्गुरुं ॥ २ ॥ कपालखट्वांगधरं, चन्द्रार्द्धकृतलखरं
 विष्णुलज्जमनदम्भं, महावृषहवाहनं ॥ ३ ॥ जटाकूटधरं दर्वं, वासुकीकण्ठरूपी । विरूति
 रूषणं दर्वं, नीलकण्ठशिलाचरं ॥ ४ ॥ दीपिचर्मपरीक्षरं, शुद्धसूटिकसंनिही । सहस्रादि
 नुर्मंकारं, गिरिजाह्वयरूपी ॥ ५ ॥ पदमयशिवसातथं, कारुण्यविष्णुपिपी । कर्ताजलि
 पूर्णरूपा, पाहतीलिखिवाहनः ॥ ६ ॥ ॥ कारुणिकयउवाच ॥ देवदेवमहादेव, सृष्टिसृष्टि
 लयात्मकः । त्वंगतिः सर्वदेवतां, त्वंगतिः सर्वदहितां ॥ १ ॥ त्वंगतिः सर्वरूपां, दीनानां च
 त्वमवहि । त्वमवजगदाधन, त्वमवविष्णुकारणं ॥ २ ॥ त्वमवपूषः सर्वेषां, त्वदन्यानां हि भ

गतिः किं पुच्छयममं लाके, । कर्मकं सर्वसिद्धिदं ॥ ३ ॥ किमकीयवर्मं धृष्टं, कियोगः स्वर्गमा
 कृदं । विनातीत्यततपसा, विनादानं विनामस्वि ॥ १० ॥ विनालयनध्वमन, कुनसिद्धिमवाप्नुयात्
 कस्मात्पश्यतस्तुष्टिः । कस्मिन्पुनरुवाच ॥ ११ ॥ कस्माद्भीषतदेव, संसारार्णवसंकटात् । तदहं
 प्रमुक्तमि, कथयन्ममरुष्टव ॥ १२ ॥ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ साधुसाधुत्वापृक्तं, शृणुष्वार्थं
 नीतन्यत । अस्मिन्पुनरुवाच, कथयिष्याम्यनसंशयं ॥ १३ ॥ सत्त्वैवजस्रमस्यैव, उक्तविष्णुनिवाद्यः ।
 यवान्यवर्णारूपाः सर्वपुनरुवाच ॥ १४ ॥ सेवयतीयनाशकि, महीशिवयुवसूचनी । सेवयस्य
 यतविष्णु, विष्णुसेवयुवालयः ॥ १५ ॥ सेवसंरुक्तविष्णु, जगदतनुवाचनं । आधनः सर्वरूपां
 सेवनागमहिताविनी ॥ १६ ॥ ॥ कृष्णानाशियाशकि, उक्तविष्णुनिवाद्यः । विष्णुकिस्त्वयं पद, सु
 स्मिस्मिति विनाशिनो ॥ १७ ॥ सूर्यतुल्यवपुः पद, विष्णुपदं पात्यते । संहारवपुः पद, जगदतनुः
 वाचनं ॥ १८ ॥ यस्याधोनीजगत्सर्वं, मयापीतं रुतं लिखितं । यस्यापलीयतं चाकं, तस्याचक्रायतं प

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

मदवागाथे २ लिङ्ग ॥ ३ नैके कर्षट्वाश्वात्मदव्याख्य ॥ ३ उँ उँ सिह नश्वात्म ० चन्द्राय ॥ ३
जं अं गं संहलं कन्यावाश्वात्म ० निवसि ॥ ३ कं १ गुलावाश्वात्म ० वामया ॥ ३ चं १ दृष्टिक
वाश्वात्मदवगा ० वामकदाय ॥ ३ टं १ धनूवाश्वात्मदवगा ० वामय ॥ ३ गं १ मकनवाश्वात्म
० क ॥ ३ यं १ कूरवाश्वात्म ० दृष्ट ॥ ३ यं १ मीनवाश्वात्मदव ० वामया ॥ ३ निवासि न्यास
॥ ॥ अथयी ० न्यास ॥ जे कीं जी अं काम नूययी ० य ॥ २ अं वा नू नसीयी ० य ॥ २ ० न्यालयी
० ॥ २ ० शीयी ० विद्वन ॥ उँ उयविक्कि ० ॥ उँ कान्यकू ॥ अं पूरुगिनि ॥ अं अद्द ॥ ६ अमा
टक ॥ ६ उकासुक ॥ उं गिभाग ॥ उं कामकाट ॥ उं केलीग ॥ उं रगुवर्धन ॥ अं कदान
अश्ववन्द्यपू ॥ कं शीयी ० ॥ खं उकवीन ॥ गं जानधन ॥ घं मानव ॥ हं कल्लूक ॥ चं दवीका ॥ कुं
शमकल ॥ जं मनुक ॥ चं अद्दहास ॥ उं विनज ॥ टं बाजगरु ॥ पं महाव ॥ उं काल्हापू ॥ उं
उलापू ॥ लं उं कानयी ० ॥ गं जयकी ० ॥ थं उं कूयिनी ॥ दं किशायी ० ॥ वं कीवयी ० ॥ नं हसिनाय
नी ॥ यं उं कूयिनी ॥ रं घराग ॥ वं विलयी ० ॥ रं मायापूनी ॥ मं जलश्वन ॥ यं मनयागिनी ॥ नं श्री
गीनी ॥ लं मन्गिवेनी ॥ शं महदयी ० ॥ वं वामन ॥ संहिनद्वयी ० ॥ हं महालक्ष्मीपूनी ॥ लं

नमो भगवते वासुदेवाय

उद्यानयी ० ॥ नैऋतीं नैऋतं कृत्वा कृत्वा ० यनमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ० गीयी ० न्यासः ॥ ॥
 ० गीलीलव्यादा न्यासः ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ मातृपितृपुत्रपुत्रा ॥ ॥ न्यासविहीनं यः ॥ ॥
 न्यासः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ न्यासविहीनं यः ॥ ॥ न्यासविहीनं यः ॥ ॥
 विना नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 मातृपितृपुत्रपुत्रा ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 गीलीलव्यादा न्यासः ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 लं ॥ काठिकंदयलावर्धं सदाया उवाचिकं मन्त्रमिगमस्वाहा ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 शुभलयादियहसत्सुखिनी ॥ यं ववर्धं ववर्धं ॥ सर्वहिनलरुषिनी ॥ ववर्धं सदाया उवाचिकं ॥
 कालकं विनु ॥ पातयार्धं ववर्धं विनु ॥ ववर्धं सदाया उवाचिकं ॥ विना नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लं ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

अन्वास्मद्वि ॥ श्रीनृपं वा विना नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अथवा निष्कलं आथमस्मिदा नन्दनृपि लं ॥ सर्वहिनलरुषिनी ॥
 साकासेव वाचलं लं ॥ गतं सर्वदण्डं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ यानि लिङ्गं सुवर्णिहनिमूला
 चतुष्टयं ॥ वनमालामिह मूला निमा मूला मिमिकुमा ॥ यथा ॥ किं जयन्मन्त्रं मन्त्रं पाद
 कादयं ॥ मूर्ध्नि संविद्यद्विगी गुनं निवर्धयि लं ॥ श्रीगुरुं कृत्वा लं ॥ वनं उका नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लिङ्गादिषु ॥ ॥ ॥ अथवा निष्कलं आथमस्मिदा नन्दनृपि लं ॥ सर्वहिनलरुषिनी ॥
 जगती कृत्वा निवर्धयि लं ॥ साकासेव वाचलं लं ॥ गतं सर्वदण्डं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 मन्त्रमिगमस्वाहा ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 लं ॥ काठिकंदयलावर्धं सदाया उवाचिकं मन्त्रमिगमस्वाहा ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 शुभलयादियहसत्सुखिनी ॥ यं ववर्धं ववर्धं ॥ सर्वहिनलरुषिनी ॥ ववर्धं सदाया उवाचिकं ॥
 कालकं विनु ॥ पातयार्धं ववर्धं विनु ॥ ववर्धं सदाया उवाचिकं ॥ विना नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लं ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

[illegible]

दियं कान्कनात्मिकाये यं कान्कनमनुधिदवताये अखिलरुलपदाये यं कूटं श्वर्यम्
दयौ श्वर्यं विष्णु विष्णु ॥ ८ कैं खें गं यं मूककाटि रं दस्का दिये जे कान्कनात्मिकाये यं कूटं
मनुधिदवताये अखिलरुलपदाये यं कूटं श्वर्यम् दयौ ॥ अस्माया ॥ ८ खें खें सक्
लककाटि रं द गल्लमदि सका कान्कनात्मिकाये सका कान्कनमनुधिदवताये अखि
लरुलपदाये यं कूटं श्वर्यम् दयौ ॥ २ विष्णु ॥ १० ॥ ८ कैं खें गं अखिलरुलपदाये अखि
कायशा कान्कनात्मिकाये अखि कान्कनमनुधिदवताये अखिलरुलपदाये अखि कूटं
श्वर्यम् दयौ ॥ १ नाद ॥ ८ खें खें नवलककाटि रं द पुष्पादि नवा कान्कनात्मिका
ये नवान्कनमनुधिदवताये अखिलरुलपदाये नवलकूटं श्वर्यम् दयौ ॥
नाद ॥ ७ ॥ ८ खें खें दगलककाटि रं द विष्णु दि दगल कान्कनात्मिकाये दगल
नमनुधिदवताये अखिलरुलपदाये दगलकूटं श्वर्यम् दयौ ॥ विसर्गकान् ॥

८ खें खें नकादगलककाटि रं द रूपादि नकादगल कान्कनात्मिकाये नकादगलकलमनुधिद
वताये अखिलरुलपदाये नकादगलकूटं श्वर्यम् दयौ ॥ विसर्गकान् ॥ ८ खें खें यं द
दगलककाटि रं द दगलपुवादि दगल कान्कनात्मिकाये दगल कान्कनमनुधिदवताये अखि
लरुलपदाये दगलकूटं श्वर्यम् दयौ ॥ २ गून्धनं पुष्पा ॥ ८ खें खें यं दगलकका
टि रं द लन्धु दि यथादगल कान्कनात्मिकाये यथादगलमनुधिदवताये अखिलरुलपदा
ये यथादगलकूटं श्वर्यम् दयौ ॥ व्यापिकाया ॥ ८ मं यं वं वरुदगलककाटि रं द ग
यादि वरुदगल कान्कनात्मिकाये वरुदगल कान्कनमनुधिदवताये अखिलरुलपदाये वरु
दगलकूटं श्वर्यम् दयौ ॥ २ निलाधिकाया ॥ ८ लं वं नं यं वदगलककाटि रं द दूरीदि
यं वदगल मूला कान्कनात्मिकाये यं वदगल कान्कनमनुधिदवताये अखिलरुलपदाये यं व
कूटं श्वर्यम् दयौ ॥ २ वक्रविल ॥ ८ खें खें लं यं दगलककाटि रं द गियेनादि दगल

[illegible]

०। कूर्य न ॥ ३ अं अमृता कर्षिती नित्या ० वामाक्ष ॥ ३ अं ४ गनी ना कर्षिती नित्या ०। कूर्य न ॥
 ५ वषा ७ गनी नित्या ॥ ५ नं क्रीं सी ४ यि न स्य नी च कुं ४ व नी नित्या ७ यी ॥ छदि ॥ ५ ना गु क यी
 गिन्य ४ सर्वा सायू न क च कुं समू जा ४ ४ लादि पू र्व ॥ ५ मू जा ५ द ग यी ॥ ॥ अखल कमला
 गनम ४ ॥ व्याय कं ॥ ५ नं क्रीं क्रीं कं ५ अ नं ग क स मा द वी ५ ० द न क र्ग र्व ॥ २ व ५ अ नं ग म य ला
 द वी ५ ॥ वामाक्ष ॥ ३ ४ ५ अ नं ग म द ना द वी ० द न्का नी ॥ ३ ४ ५ अ नं ग म द ना तु ला द वी ० द न्का
 गु र्ग ॥ ३ यं ५ अ नं ग न र्वा ० वाम गु र्ग ॥ ३ शं ४ अ न क्का क्का द वी ० वामाक्ष ॥ ३ लं ५ अ नं ग मा
 लिनी द वी ० वामाक्ष ॥ ५ व म नं ग न क्का क्का वि न्य म् ॥ क्रीं क्रीं सी ० यि न स न्द नी नित्या च
 कुं ४ व नी ५ ० छदि ॥ ५ ना गु क न य गिन्य ४ सर्व स ॥ ५ का न क च कुं समू जा दि ॥ क्री मू जा द
 न य ॥ २ ॥ ॥ २ व गु र्ग न व का य २ व्याय कं ॥ ५ नं क्रीं सी सर्व स न्का रिनी ग कि ५ ० द न्का
 ला ग य ॥ ३ ५ ५ सर्व वि ५ वि ली ग कि ५ ० ॥ ललाट ॥ ३ ५ ५ सर्व कर्षिती द न्का स ॥ ३ अं सर्व जी
 दिनी ग कि ० ॥ अ य रि ॥ ३ ५ ५ सर्व स न्का रिनी ५ ० ॥ पार्ष्ण ॥ ३ ५ ५ सर्व स न्का रिनी ग कि ॥ ५ ५ ॥ ३ ५